आपातकाल में सृजन फुलवारी

अरविन्द त्रिवेदी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अरविन्द त्रिवेदी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-180-0

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण-2020, अरविन्द त्रिवेदी

मूल्य-50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ARVIND TRIVEDI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	वियोग गीत	6
2.	ग़ज़ल	7
3.	आखिरी खत	8
4.	आँसुओं को मगर क्यों छुपाता रहा	9
5.	परिवार	10
6.	तर्पण	11
7.	भारत का गौरव गान सुनो	12
8.	मैं मकाँ उसी से बचा गया	13
9.	प्रत्याशा	14
10.	महिला दिवस	15
11.	वीरों की उड़ान	16
12.	निराला-गालिब	17
13.	आँखें	18
14.	नज़्म	19
15.	मैं चला ओढ़ गम	20
16.	चाह	21

वियोग गीत

ज़िन्दगी में जो सँजोये प्रेम के पल नित्य मैंने,
पल वही मिलकर सभी क्यों अब मुझे ठगने लगे हैं।

हाय ! इस निष्ठुर नियति ने क्यों अकारण ही छला है?
ठोकरों के घाव से तन देख कैसे यह गला है।
स्वप्न सब बिखरे पड़े हैं जिन्दगी वीरान लगती,
कामना के शीर्ष से हिम की तरह गलने लगे हैं।।

बंधनों की कसमसाहट से कभी मैं सो न पाया।
खो न जाऊँ मैं कहीं डर से कभी-भी सो न पाया।
भीड़ कितनी, लोग कितने मैं अकेला सा खड़ा हूँ,
स्वप्न सारे आस के संताप में जलने लगे हैं।।

रख लिया पतझड़ स्वयं ही सौंपकर मधुमास तुमको।
मैं पराजित हो गया देकर विजय विश्वास तुमको।
इस व्यथा के द्वार से हर आह निकली बस दुआ बन,
हम थके दिनकर सरीखे सांझ में ढलने लगे हैं।।

ग़ज़ल

दबे अरमान लाखों हैं बसी सूरत तुम्हारी है।
मुहब्बत की मुझे भी लग चुकी शायद बिमारी है।

तुम्हीं हो आरज़ू मेरी तुम्हारी चाह इस दिल को,
मुनासिब अब कहाँ जीना गज़ब की ये ख़ुमारी है।

लगी हैं बंदिशें मुझपर गुलामी है रिवाज़ों की,
परिन्दा कैद में जकड़ा तड़प है बेकरारी है।

मिले थे अज़नबी बनकर बना इक अनकहा रिश्ता,
बनूँ राँझा तुम्हारा मैं बनी तू हीर प्यारी है।

पढ़े "अरविन्द" कलमा जब लबों पर नाम तेरा हो,
बहारें साथ गुज़रें सब यही चाहत हमारी है।

आखिरी खत

कितना मुश्किल है
दिल के जज़्बातों को
कागज़ पर उकेरना,
अहसासों को अल्फ़ाज़ों में समेटना,
कोशिश कर रहा हूँ, अपने
हाल ए दिल को, इस खत में
तुम तक पहुँचा सकूँ।
जबसे हुई है,
हमारे-तुम्हारे दरमियां ये दूरियाँ
ख़ामोश लगती हैं धड़कनें
बेखबर, गुमशुम सा
भटकता रहता हूँ, वीराने सी
नज़र आती हैं रौनकें अब
ज़माने की, जानता हूँ
मुमकिन नहीं, रिवाजों की बेड़ियाँ
तोड़कर, दुबारा लौटकर आना,
पर ये दिल बिना तुम्हारी
छुअन के, धड़कनें को तैयार नहीं।
जला देना, बेशक मेरे सारे
खतों को, पर ये आखिरी खत
सँभालकर रखना, शायद
ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर
जरूरत पड़ जाए तुम्हें, मेरी.....

आँसुओं को मगर क्यों छुपाता रहा

नाव जीवन की डगमग बहे रात दिन,
भय का सागर हमेशा डराता रहा।
वेदना से ग्रसित देह देखीं सभी,
आँसुओं को मगर क्यों छुपाता रहा?

हो रहा नित मुखर कष्ट देखो जरा,
साँस लाखों की विष में यहाँ पल रहीं।
भूल की एक ने पर भुगत सब रहे,
रोज लाशें चिता पर यहाँ जल रहीं।
व्योम पर छा रहा है अँधेरा घना,
श्राप जीवन को प्रतिदिन रुलाता रहा।।

काल विध्वंस करता चला जा रहा,
अश्रु, भय के सिवा शेष कुछ भी नहीं।
शोर सिमटा पड़ा चुप्पियों में अभी,
व्याधि की मिल न पाई दवाई कहीं।
हर नगर गाँव सूना पड़ा देख ले,
दूरियाँ परिजनों में बढ़ाता रहा।।

देख परिणाम कुदरत से विद्रोह का,
मृत्यु का नित्य अनुपात बढ़ने लगा।
रोक दो प्रभु भयावह प्रलय ज्वार को,
चक्र जीवन का देखो ये थमने लगा।
श्रेष्ठता, लोभ, लालच में फँसकर सदा,
एक दूजे को मानव सताता रहा।।

परिवार

यह सम्बंधों की जन्म-स्थली,
करुणा, आदर, सत्कार यहाँ।
प्रेम, एकता के बंधन से,
नित बनता है परिवार यहाँ।।

यही केंद्र है जो मानव में,
नित चेतनता को गढ़ता है।
निकल यहाँ से मानव जग में,
सामाजिक स्तर पर बढ़ता है।।

जीवन के सब कर्तव्यों का,
यह बोध हमें करवाता है।
दुख-सुख हो या हार-जीत में,
साथी बन साथ निभाता है।।

अधिकार भाव में टूट रहे,
देखो कितने परिवार यहाँ?
एकाकी जीवन भाता है,
अब मेल-जोल त्योहार कहाँ।।

तर्पण

दूर क्षितिज के पार
विस्तृत, व्यापक, अनन्त नीलाम्बर में
यामिनी के आगमन पर
लगती है सभा तारागणों की,
इन्हीं टिमटिमाते नक्षत्रों के मध्य
कहीं तुम भी तो हो।
जब मध्य रात्रि के
शान्त वातावरण में बैठता हूँ
एकाग्र होकर, ऐसा प्रतीत होता है
कि आकर आप फेरते हो,
आशीषों भरे हाथ मुझपर,
मेरे अंधकारमय जीवन में
तुम्हीं हो भास्कर, जिसके
विचारों के प्रकाश में निरंतर
बढ़ता रहता हूँ, कर्म पथ पर
नित प्रयास करता हूँ, तुम्हारे
सिद्धांतों को अंगीकार करने का।
हे! पितामह जीवन के अनगिनत
पड़ावों पर खोजता हूँ,
तुम्हारे पदचिन्हों की रज,
जिसके स्पर्श मात्र से होता है,
अपूर्व शक्ति का संचार
जो प्रेरित करती है, मुझे
सत्य के मार्ग पर निडर होकर चलते रहने को.....!

भारत का गौरव गान सुनो

युगों-युगों से खड़ा हिमालय, युगों-युगों से गंगा बहती।
त्याग, तपोवन भूमि यही है, भारत का गौरव-गान सुनो।।

संस्कार की पृष्ठभूमि रच, विज्ञान सभी को समझाया।
शून्य विश्व को देकर हमनें, फिर गणना करना सिखलाया।
अभिमानी मस्तक उठते जब, तूणीरों का संधान सुनो।।
भारत का गौरव-गान सुनो,...

अध्यात्मिकता का ज्ञान प्राप्त कर, जीवन का सारांश बताया।
भाषा, नीति, न्याय, दर्शन का, नित्य जगत को पाठ पढ़ाया।
जब स्वाभिमान पर करे वार अरि, वीरों का फिर बलिदान सुनो।।
भारत का गौरव-गान सुनो,...

छः ऋतुओं से सजा देश यह, भिन्न-भिन्न है परिवेश यहाँ।
यह राम-कृष्ण की जन्म-स्थली, ऋषि-मुनियों का उपदेश यहांॅ।
मानवता की सुधा पिलाकर, शिव-शंकर का विषपान सुनो।।
भारत का गौरव-गान सुनो,...

जाति-धर्म है पृथक-पृथक पर, एक सूत्र में बँधकर रहते।
भक्ति, प्रेम, सौहार्द हृदय में, सदा सत्य की पूजा करते।
और नहीं है जग में दूजा, इस जैसा हिन्दुस्तान सुनो।।
भारत का गौरव-गान सुनो,...

मैं मकाँ उसी से बचा गया

जो लिखा नसीब में है तेरे, वही ज़िन्दगी में तू पा गया।
कहीं कोई रोता ही रह गया, तो कहीं किसी को हँसा गया।

कहीं मज़हबी सा बवाल है, कई नोचते मिले जिस्म को,
ये अदावतों भरा दौर है, जो जहां में लाशें बिछा गया।

कोई प्यार में है तड़प रहा, कोई प्यार को है तरस रहा,
मैं न कह सका कभी आप से, ये मलाल दिल में छिपा गया।

न ज़मीन पर कहीं रौनकें, न तो कहकशां में चमक बची,
लगी गुलशनों में जो आग फिर, तो धुआँ फिज़ाओं में छा गया।

मिला दर्द अपनों से जो मुझे, 'अरविन्द' ने न कहा कभी,
जो हुनर तमीज़ का पास था, मैं मकाँ उसी से बचा गया।

प्रत्याशा

मौन प्रत्याशा लिए मैं, स्वप्न का आधार बुनता।
प्रीति की अवधारणा में नित सुखद संसार बुनता।

चेतना मस्तिष्क की जब, शून्यता के शीर्ष पर थी।
आँसुओं से देह मेरी, हो रही जब तर-ब-तर थी।
श्वाँस तन की फिर समेटी, अश्रु सारे पोंछ कर अब-
प्रेम गीतों से सदा जग-के लिए उपहार बुनता।
मौन प्रत्याशा लिए मैं,...

प्रीति की अवहेलना पर चुप रहूँ कैसे भला मैं?
बैर-भावों की अगन में, रात-दिन आखिर जला मैं।
आस के मोती गुँथे हैं, व्यंजना की डोरियों में-
पीर से सब सिक्त हृदयों-में नवल उद्‌गार बुनता।
मौन प्रत्याशा लिए मैं,...

चिर व्यथा के बंधनों को तोड़ना मैं चाहता हूँ।
कुछ नवल उपमान इसमें जोड़ना मैं चाहता हूँ।
दीप आशा का जलाकर, क्षीणता को भग्न करके-
वेदनाओं के धरातल पर प्रणय श्रृंगार बुनता।
मौन प्रत्याशा लिए मैं,...

महिला दिवस

एक दिन के वास्ते
सजाई जा रहीं है महफिलें
बड़े बड़े आयोजन
बड़ी बड़ी कवितायें
लम्बे चौड़े भाषण
हृदयस्पर्शी मार्मिक उद्‌गार
नारी के सम्मान में
क्या यह सच्चाई है?
क्या नारी के प्रति
हमारी भावनाओं में
सचमुच का परिवर्तन हुआ है
यदि हाँ, तो फिर क्यों डरते हैं
माँ बाप बच्चियों को घर से अकेले भेजने में
क्यों सड़क पर गुजरती लड़की देखकर
अश्लील और भद्‌दे तंज कसते हैं लोग
क्यों अभी भी दहेज की आग में झुलसती हैं औरतें
क्यों भरे पड़े हैं समाचार पत्र
बेबसी और लाचारी की घटनाओं से
क्यों सिसकती है जननी
उम्र के आखिरी पड़ाव पर
वृद्‌धाश्रम की चारदीवारों में
अगर हुआ है सामाजिक परिवर्तन
फिर दोषी कौन है?
या फिर ये सब दिखावा है
और ये ढोंग क्यों?

वीरों की उड़ान

यह समर यज्ञ की ज्वाला अब, आहुति तेरी माँग रही।
सिंहों का गर्जन सुनकर क्यों, गीदड़ सेना भाग रही।।

रण चण्डी का आवाहन है, शंखनाद है वीरों का।
प्रारम्भ अभी है रण का ये, क्रोध देख अब धीरों का।।

बहुत दे चुके क्षमादान अब, मृत्यृदण्ड की बारी है।
सुनो ! तेरे सौ कौरवों पर, केवल अर्जुन भारी है।।

विलम्ब नही उद्घोष है ये, अद्भुत शौर्य पराक्रम का।
क्षमता देख शान्तिदूतों के, शक्ति ज्ञान के संगम का।।

यह नवयुग का नवभारत है, इसकी देख उड़ानों को।
शीश झुकाकर नमन किया है, अपने वीर जवानों को।।

निराला-गालिब

तड़प हो भूख की जिनको,
बनें उनका निवाला हम।
नमन करलो शहीदों को,
गढ़े इक शब्द-माला हम।

लिखें हम लेख या कविता,
मिले तहज़ीब जिनसे अब,
रचें साहित्य ऐसा कुछ,
निराला सा निराला हम।।

मुखर वाणी करो अपनी,
समेटो आग सीने में।
सिखाओ प्रीति जन जन को,
न हो संताप जीने में।

कहीं मिल जाय पैमाना,
अगर गालिब के लफ्जों का,
परेशानी भला कैसी,
यहाँ फिर अश्क पीने में।।

आँखें

इशारा मिला जब हुईं चार आँखें।
मुहब्बत में करती हैं इजहार आँखें।

ये चुप्पी भला क्यों लबों पर तुम्हारे,
यहाँ इश्क में कुछ हैं बीमार आँखें।

न चाहत मिली है सभी को यहाँ पर,
हुईं नफरतों से ये आज़ार आँखें।

ज़रा सी भी हिम्मत नही दुश्मनों में,
खड़ी सरहदों पर वफ़ादार आँखें।

कहाँ दूर "अरविन्द" से जा रही हो,
रहेगीं हमेशा तलबगार आँखें।

नज़्म

समन्दर के अथाह जल से,
तेरे अश्कों की कहानी मिली।
निर्मल नदी की धारा से,
तेरे प्यार की निशानी मिली।

रेत पर मिले पदचिह्न तेरे,
मेरे ख़याल में कोसों तक गये होगें।
इन मदमस्त हवाओं से मुझे,
तेरी खुशबू सुहानी मिली।

तकता रहा चाँद रातों में
तेरी याद का सहारा मिला।
जफ़ाओं के भँवर में फँसा था,
तेरे प्यार का किनारा मिला।

बंदिशों को कहाँ तोड़ पाया,
गजब का था ताना बाना,
लगे तुम हमसफर हो मेरे,
तुमसा न कोई प्यारा मिला।

मैं चला ओढ़ गम

ख़्वाहिशें हैं अधूरी अधूरे से हम।
रो रहा दिल मेरा और आँखें हैं नम।

बुत के माफ़िक बदन आतिशे हिज्र में,
सिलसिला चाहतों का गया आज थम।

जान गिरवीं पड़ी देह का क्या करें,
ज़िन्दगी कह रही रोक ले अब कदम।

पाख उजला गया फिर अमावस हुई,
चाँद की रोशनी हो रही रोज़ कम।

रूठकर अंजुमन से यूँ निकहत चली,
दर्द दिल में लिये मैं चला ओढ़ गम।

चाह

मैं संग तेरे, हर शाम चाहूँ।
चाहत का तेरी, पैगाम चाहूँ।

मन बावरा सा, झूमें यहाँ अब।
सुध खो गई है, मैं हूँ कहाँ अब।
आँखों से तेरी, बस जाम चाहूँ।
मैं संग तेरे,...

सूना पड़ा क्यों, दिल का ये डेरा।
ख्वाबों का मेरे, हो ना सवेरा।
जुल्फों तले मैं, आराम चाहूँ।
मैं संग तेरे,...

इक अप्सरा सी, वो है निराली।
गालों पे बिखरी, है सुर्ख लाली।
यादों में तेरी, मैं नाम चाहूँ।
मैं संग तेरे,...!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

अरविन्द त्रिवेदी

Email- arvindtrivedi246@gmail.com
Mobile - 8360952205, 7087345171

आज सम्पूर्ण देश क्या बल्कि विश्व आपातकाल की स्थिति से जूझ रहा है । एक वैश्विक महामारी 'कोरोना' ने समूचे विश्व को अपनी गिरफ्त में ले रखा है। इस आपातकाल की भयावह स्थिति के मध्य मुझे भी गम्भीरता से मनन करने का अवसर मिला। कई ऐसे महत्त्वपूर्ण विषयों का अध्ययन करने का अवसर मिला। शायद जिससे हम सब काफी दूर निकल आए थे। इन सभी विचारों को एकत्रित करके उन्हें मैंने अपनी रचनाओं में उतारने का प्रयास किया । साथ ही अंतरा शब्दशक्ति से मिले संबल ने मेरे प्रयासों को एक नई ऊर्जा प्रदान की, जिसके लिए 'अंतरा शब्दशक्ति' का हृदय से आभारी हूँ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-180-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/